Course --M.A ,Education,part -1

Paper -3rd, Philosophical Foundation of Education

Prepared by -Dr Meena KumAri

Topic--- Jain Darshan & Education

जैन दर्शन एवं शिक्षा

(1) **प्रस्तावना -- जैन दर्शन को बौद्ध दर्शन के समकालीन माना जाता है। लगभग छठी सदी में जैन धर्म के 24 वें तीर्थकर भगवान महावीर ने जैन धर्म के विषय में विस्तार से चर्चा किए थे ।जैन शब्द जीन शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है विजय होना।मुख्यरूप से जैन संप्रदाय दो भागों में होता है ।श्वेतांबर तथा दिगंबर ,श्वेतांबर आचार पालन में उदार होते हैं जबकि दिगंबर लोग कठोरता से आचारों को तथा नियमों को पालन करते हैं।,**

(2) **जैन दर्शन के सिद्धांत -- जैन दर्शन का उत्थान बौद्ध दर्शन के पहले हुआ था। जैन दर्शन के 24 में तीर्थकर भगवान महावीर तथा प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ थे। जैन धर्म के साहित्य का नाम निगनठ है जो पाली भाषा में है। जैन दर्शन के अनुसार पारसनाथ ने अहिंसा, सत्य अस्तेय और अपरिग्रह इन 4 वर्तों के पालन पर जोर दिया था ।महावीर इन में ब्रह्मचर्य जोड़कर पंच महाव्रत का नाम दिया अर्थात पंच महाव्रत में अहिंसा, सत्य अस्तेय ,अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य आता है ।जैन दर्शन ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता है। मनुष्य को कर्म के अनुसार फल भोगना पड़ता है। जीव जैसा काम करेगा उसे उस तरह की गति प्राप्त होगी ।आत्मा अमर और अविनाशी है। जैन धर्म में चारित्रिक शुद्धि पर अत्यधिक बल दिया गया है ।इस हेतु त्रिरत्न का प्रावधान है ।सम्यक दर्शन,सम्यक ज्ञान तथा सम्यक चरित्र को त्रिरत्न कहते हैं ।इसके द्वारा मानव के नैतिक चरित्र का उत्थान होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को इस को अपनाना चाहिए।यह बंधन से मुक्ति का उपाय है ।जैन धर्म कठोर तपस्या पर भी अधिक जोड़ देता है ।जैन धर्म के महत्वपूर्ण सिद्धांत निम्नवत है ---**

- अनेकत्मावादी धारना --जैन धर्म का प्रमुख सिद्धांत है.! इसमें अनंत जीवों का भौतिक तत्वों के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है! विश्व के विभिन्न जीवों में पशु-पक्षी ,कीट पतंग आदि भिन्न-भिन्न जीव होते हैं ।उसी प्रकार आत्माएं विभिन्न होती है ।अतः सभी का अपना महत्व है

1. ईश्वर के विषय में अविश्वास --- जैन दर्शन ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते हैं ।उनके अनुसार संसार वास्तविक हैं और इसका कभी विनाश नहीं हो सकता है। संसार छह पदार्थों से मिलकर बना है ।जीव ,पुद्गल धर्म ,अधर्म, आकाश और काल। यह सभी सास्वत और नित्य हैं ।

2. पंच महाव्रत ---जैन धर्म के पांच महाव्रत का उपयोग किया गया है ,जो अहिंसा, सत्य अस्तेय अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य। मनुष्य को इस पर ध्यान देना चाहिए ।

3. जीव और अजीव--जैन धर्म मुख्यरूप से दो तत्वों जीव तथा अजीव में विश्वास करता है ।दोनों ही शाश्वत, अनंत और अनादि है। इन से मिलकर जगत बनता है ।जीव चैतन्य द्रव्य है और अजीव चैतन्य रहित है। जीव का विस्तार शरीर के अनुसार होता है जिसमें ,सुख ,दुख आदि का अनुभव होता रहता है ।

4. बंधन तथा मुक्ति -- जैन दर्शन के अनुसार क्रोध,लोभ,तथा मोह जैसे कर्म मनुष्य को बंधन में डालती है। कर्मों का फल भोगने के लिए उसे बार-बार जन्म लेना पड़ता है। बंधनों से मुक्ति प्राप्त करना ही जैन धर्म का प्रथम लक्ष्य है।

(3) जैन दर्शन एवं शिक्षा के उद्देश्य --- जैन साहित्य में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है ताकि 1आध्यात्मिक विकास के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति कर सके। जैन दर्शन के अनुसार जीव तत्व का ज्ञान प्राप्त करना एवं आत्म कल्याण की ओर अग्रसर होना ही शिक्षा है। जैन साहित्य एवं दर्शन का

शिक्षा के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके अनुसार शिक्षा का महत्व कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नवत हैं---

- जियो और जीने दो की भावना का विकास -- भगवान महावीर ने अहिंसा के व्रत पर के पालन पर अधिक बल दिया था !वह मन , वचन और कर्म तीनों प्रकार की हिंसा से लोगों को बचने की सलाह दिए थे जैन दर्शन के अनुसार अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है अतः जैन धर्म के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अहिंसा के साथ जीना है।

- नैतिकता के विकास पर बल -- जैन दर्शन के अनुसार शिक्षा के माध्यम से बालक को उच्च नैतिकता के विकास की शिक्षा देनी चाहिए ।भगवान महावीर ने पंच व्रत का पालन करने की बात की थी। उन्होंने त्रिरत्न के द्वारा चरित्र के विकास की भी बात किए थे। मोक्ष शास्त्र नामक ग्रंथ में तो प्रारंभ में ही बतलाया गया है कि सम्यक दर्शन, ज्ञान ,चरित्र ,मोक्ष मार्ग का रास्ता है। अतः जैन धर्म दर्शन व्रत ,तप और योग के माध्यम से उच्च नैतिकता के विकास की बात मानते है ।

- जीवन में कर्म की प्रधानता पर बल देना -- जैन दर्शन ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है ।वह संसार में विश्वास करते हैं ।जीवन अपने कर्म के अनुसार ही लोग फल पाते हैं ।कर्म फल जीव को अवश्य ही भोगना पड़ता है और कर्म के अनुसार उसकी गति होती है।

- कठोर जीवनयापन पर बल -- जैन दर्शन के अनुसार इनका उद्देश्य कठोर जीवनयापन की शिक्षा देना है। मोक्ष प्राप्त करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बतलाया गया है। मोक्ष की प्राप्ति कठिन तप, व्रत, उपवास एवं संयमित जीवन यापन से ही संभव है। मोक्ष का अर्थ होता है बंधन हीन और मुक्त होना। यह जीवन बंधन मुक्ति तभी संभव है जब भूख ,प्यास ,निद्रा ,सेक्स आदि ना सताए ।इनसे छुटकारा कठोर ,नियमित एवं समिति जीवन से ही संभव है ।अतः बालक को कठोर जीवन की शिक्षा देना ही मुख्य उद्देश्य है।

- व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास ---जैन दर्शन के अनुसार व्यक्तित्व का विकास शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है !व्यक्तित्व के विकास द्वारा ही ज्ञान संभव है !ज्ञान के द्वारा ही अंतरात्मा का अंतर पहचाना जा सकता है! सात्विक और सत्य ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है ।सम्यक ज्ञान के द्वारा ही

सही निर्णय पर पहुंचा जा सकता है ।व्यक्तित्व का समग्र रूप से विकसित करने पर ही संभव है। बालक के विकास हेतु त्रिरत्न के माध्यम से बालक की क्षमताओं एवं शक्तियों का विकास करना चाहिए ।

(4) जैन दर्शन एवं पाठ्यक्रम -- जैन दर्शन के अनुसार पाठ्यचर्या को दो भागों में विभक्त किया गया है !भौतिक विषयों का ज्ञान तथा आध्यात्मिक विषयों का ज्ञान !जैन साहित्य में आगम ग्रंथों का मुख्य स्थान है !व्यवहार सूत्र नामक ग्रंथ में पाठ्यक्रम संबंधित वर्णन उपलब्ध है! व्यवहार सूत्र ग्रंथ में सूत्रों के दो भेद किए गए हैं। १) द्रव्य श्रुति २) भाव श्रुति

1. द्रव्य श्रुति का अर्थ है भौतिक विषयों का ज्ञान और भाव श्रुति का अर्थ अध्यात्मिक । भौतिक तथा अध्यात्मिक दोनों विषयों का ज्ञान होना चाहिए।इस प्रकार जैन दर्शन में भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों विषयों को पाठशाला में स्थान दिया गया है ।इन दोनों विषयों का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार से है आध्यात्मिक विषयों के अंतर्गत आते हैं --

    a) आगम ग्रंथ-- जैन दर्शन में आगम ग्रंथों का प्रमुख स्थान है।यह आगम सिद्धांत के नाम से जाने जाते हैं ।यह श्वेतांबर तथा दिगंबर जैन दोनों के लिए आवश्यक है ।जैन दर्शन के सिद्धांत और नियमों का इस में वर्णन किया गया है।

    b) प्रबंध ग्रंथ -- इस ग्रंथ में तीर्थंकर एवम् मुनियों के जीवन से संबंधित वर्णन मिलता है। जैन दर्शन के अनुसार 24 तीर्थंकर है जिनमें ऋषभदेव तथा अंतिम महावीर हैं। जैन साधु में मुनि का सर्वोच्च स्थान होता है अतः इनके चरित्र संबंधी या जीवनी का वर्णन इन ग्रंथ में मिलता है। प्रबंध साहित्य में केवल जैन मुनियों का जीवन का ही उल्लेख किया गया है।

उक्त ग्रंथों के माध्यम से बालकों में अहिंसा , व्रत एवं कठोर जीवन यापन की भावना जागृत करना है। जैन दर्शन के अनुसार व्यक्ति के जीवन को उन्नति शील बनाने वाला ज्ञान हीं सच्चा तथा वैध ज्ञान है वैध ज्ञान के माध्यम से ही चरित्र को उच्च तथा सम्यक बनाया जा सकता है जिससे मोक्ष की प्राप्ति संभव हो।

३)भौतिक विषयों का अध्ययन-- आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ जैन दर्शन के अनुसार भौतिक विषयों का भी पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान है ।तर्कशास्त्र ,इतिहास, व्याकरण दर्शन , योग आदि को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है ।ललित कला ,वस्तु कला तथा शिल्प कला भी पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग है। इस प्रकार जैन दर्शन के अनुसार अन्य विषयों को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है!

(5) जैन दर्शन एवं शिक्षण विधियां --- जैन दर्शन के अनुसार कर्म बंधन को ज्ञान के माध्यम से ही काटा जा सकता है ।ज्ञान के द्वारा ही कर्म बंधनों से मुक्त हुआ जा सकता है। शिक्षण विधियों के रूप में व्याख्यान विधि ,वार्तालाप विधि, स्वाध्याय विधि मौखिक विधि तथा अनुप्रेक्षा विधि का वर्चस्व देखा गया है ।वर्तमान में जैन साधु अपने शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते हैं ।जैन साधु की टोली में अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है ।जैन साहित्य में आगम का प्रमुख स्थान है । इस स्थान में स्वाध्याय विधि का भी उल्लेख मिलता है। स्वाध्याय विधि के अंतर्गत पांच प्रकार की बातों का उल्लेख मिलता है जिसमें अनुप्रेक्षा तथा धर्म कथा महत्वपूर्ण है।

(6) जैन दर्शन एवं गुरु शिष्य संबंध-- जैन दर्शन के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था मठों में थी। छात्र गुरु के चरणों में रहकर शिक्षा ग्रहण करता था ।गुरु शिष्य संबंध पिता तथा पुत्र की तरह था ।अनुशासन कठोर था और जीवन संयमित व्यतीत करना पड़ता था ।मठों की स्वच्छता ,साज सज्जा ,सफाई आदि का काम शिष्यों के द्वारा ही किया जाता था ।शिष्य गुरु की तन मन से सेवा करता था ।गुरु भी शिष्य पर पुत्रवत स्नेह रखते थे ।जैन दर्शन में गुरु के साथ-साथ शिष्यों के गुणों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है तथा गुणों के चरित्र के विषय में भी इसमें वर्णन मिलता है ।जैन दर्शन के अनुसार शिष्य को गुरू के प्रति समर्पण की भावना रखना चाहिए । विद्या अध्ययन गणेश चतुर्थी के दिन से शुरू होता था और विद्या समाप्ति पश्चात विदाई समारोह मनाया जाता था ।इस प्रकार गुरु शिष्य संबंध भावना पर आधारित था!

इस प्रकार जैन दर्शन में बहुत सारी महत्वपूर्ण बातों का पता चलता है, जो वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है। संयमित जीवन, चरित्र निर्माण, कठोर जीवन जीना तथा अनुशासन इत्यादि । कर्म और अनुशासन अध्ययन और शिक्षा के लिए अनिवार्य है तथा छात्र आत्मानुशासन के द्वारा ही सर्वांगीण विकास को पा सकता है।